मेघदूत का संपूर्ण एवं प्रामाणिक संस्करण

संस्कृत के महान साहित्यकार कालिदास ने जब आषाढ़ के प्रथम दिन आकाश पर मेघ उमड़ते देखे, तो उनकी कल्पना ने उड़ान भरकर उनसे यक्ष और मेघ के माध्यम से विरह-व्यथा का वर्णन करने के लिए *मेघदूत* की रचना करवा डाली और देखते-ही-देखते दुनियाभर में कालिदास की यह कल्पना उनकी अनन्य कृति बन गई।

इस संस्करण का उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्रतियोगियों के लिए एक ही स्थान पर सारगर्भित सामग्री को पाठ्यक्रम के अनुसार एवं महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तरी सहित उपलब्ध कराना है।

मेघदूत के इस संस्करण में मूल श्लोकों के साथ सरल काव्यमय हिन्दी रूपांतरण भी दिया गया है। इसका हिन्दी रूपांतरण महान शिक्षाशास्त्री डॉ. भगवतशरण उपाध्याय ने किया है और इसकी भूमिका हिन्दी साहित्य में द्विवेदी युग के प्रणेता प्रख्यात साहित्यकार महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखी है।

आवरण डिज़ाइन : www.maniworks.com

FSC

नॉन-फ़िक्शन

ISBN 978-01-434-6750-2

MRP ₹299 (incl. of all taxes)

www.penguin.co.in

कालिदास

मेघदूत

कालिदास

मेघदूत

छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी प्रश्नोत्तरी सहित

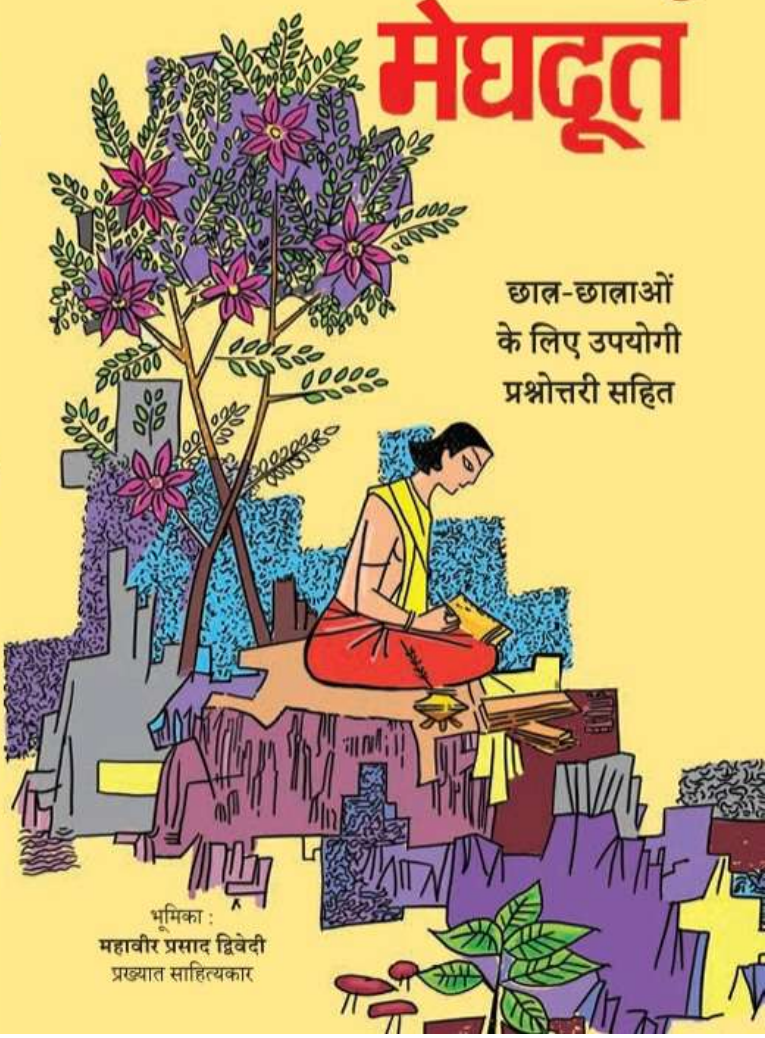

भूमिका :
महावीर प्रसाद द्विवेदी
प्रख्यात साहित्यकार

मेघदूत

छात्र-छात्राओं के लिए
उपयोगी प्रश्नोत्तरी सहित

कालिदास

पेंगुइन स्वदेश
पेंगुइन रैंडम हाउस इंप्रिंट

पेंगुइन स्वदेश

यूएसए | कनाडा | यूके | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया | सिंगापुर
न्यूज़ीलैंड | भारत | दक्षिण अफ्रीका | चीन
पेंगुइन स्वदेश, पेंगुइन रैंडम हाउस ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज़ का हिस्सा है,
जिसका पता global.penguinrandomhouse.com पर मिलेगा

पेंगुइन रैंडम हाउस इडिया प्रा. लि.,
चौथी मंजिल, कैपिटल टावर -1, एम जी रोड,
गुड़गांव 122022, हरियाणा, भारत

पेंगुइन
रैंडम हाऊस
इंडिया

प्रस्तुत हिन्दी संस्करण पेंगुइन स्वदेश में पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा 2024 में प्रकाशित

हिंदी अनुवाद : डॉ. भगवतशरण उपाध्याय

हिंदी अनुवाद कॉपीराइट © हिंद पॉकेट बुक्स
भूमिका © महावीर प्रसाद द्विवेदी
प्रस्तावना © डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ
प्रश्नोत्तरी © आचार्य ब्रह्मदत्त शास्त्री एवं ओमपाल सिंह शास्त्री
सर्वाधिकार सुरक्षित

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, जिनका यथासंभव तथ्यात्मक सत्यापन किया गया है, और इस सम्बन्ध में प्रकाशक एवं सहयोगी प्रकाशक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं हैं।

ISBN 9780143467502
टाइपसेटः www.maniworks.com
मुद्रकः रेप्रो इंडिया लिमिटेड
यह पुस्तक रीसाइकल्ड कागज़ पर मुद्रित हुई है

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर विक्रय या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद अथवा किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के ख़रीददार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं।

www.penguin.co.in

अनुक्रम

प्रस्तावना	*vii*
भूमिका	*xi*
कालिदास और मेघदूत	*xix*
पूर्वमेघ	1
उत्तरमेघ	69
अतिरिक्त छंद	127
मेघदूत प्रश्नोत्तरी	145
परिशिष्ट 1 : संदर्भ एवं मेघदूत पर चर्चित कार्य	171
परिशिष्ट 2 : विभिन्न भाषाओं में अनुवाद	173

प्रस्तावना

पुरा कविनां गणना प्रसङ्गे कनिष्ठकाधितिष्ठतिकालिदासा।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभवादनामिका सार्थवती बभूव॥

कविकुलचूडामणि-कविकुलगुरु कालिदास धरती का एक विशेष विलोभनीय स्वप्न! कालिदास की प्रत्येक रचना के आस्वाद में रसिक वाचक तन-मन की सुध खो जाता है। इतना ही नहीं उनकी अलौकिक रचनाओं के आगे नतमस्तक भी हो जाता है। जर्मन कवि गेटे जैसा दार्शनिक कालिदास की रचनाओं को अपने सर पर रख कर घंटों अत्यानंद की अनुभूति में नाचता रहता है। योगी अरविंद जैसा तत्वचिंतक भी भाव-विभोर हो जाता है। ऐसे महाकवि की रचनाएँ हर युग में प्रासंगिक हो जाती हैं।

कालिदास संस्कृत वाङ्मय के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि-नाटककार रहे हैं। उन्होंने *ऋतुसंहारम्* (खण्डकाव्य), *मेघदूतम्* (सन्देश-काव्य), *कुमारसम्भवम्* (महाकाव्य), *रघुवंशम्* (महाकाव्य), *मालविकाग्निमित्रम्* (नाटक), *विक्रमोर्वशीयम्* (नाटक) एवं *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* (नाटक) जैसी महान रचनाओं के रूप में सारस्वत योगदान किया है।

उपर्युक्त रचनाओं में से दूसरी रचना *मेघदूतम्* सर्वाधिक चर्चित है। इस संदेश-काव्य का अनन्य साधारण महत्व है, क्योंकि इसी रचना से कालिदास को वैश्विक कीर्ति प्राप्त हुई है। दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने *मेघदूतम्* का स्रोत *श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्*, पूर्णसरस्वती ने *महाभारतम्* को माना है। इस सन्देश-काव्य में मानवीय भावनाओं का अथाह सागर है। डॉ. एन. पी. उन्नि ने *मेघूदतम्* पर लिखी तिरसठ (63)

टीकाओं का विवरण दिया है। इनमें सुप्रसिद्ध टीकाकार दिनकर मिश्र, पूर्ण सरस्वती, मालतीमाधवम् आदि प्रबन्धों पर विश्रुत टीका लिखने वाले जगद्धर, परमेश्वर, सारोद्धारिणी का अज्ञात नामा लेखक, महिमसंघगणि, सुमतिविजय, विजयसूरिगणि, भरतल्लिक, कृष्णपति आदि की टीकाएँ उल्लेखनीय हैं।

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तु:।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥
तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्त: स कामी,
नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठ:।
आषाढस्य प्रथम दिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं,
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥

अलकापुराधीश वैश्रवण कुबेर महाराज की शापवाणी से एक वर्ष के वनवास का भुक्तभोगी यक्ष आठ महीनों के बाद रामगिरी नामक पर्वत पर दिग्भ्रमित अवस्था में घूम रहा है। ठीक उसी समय जब वर्षा ऋतु का आगमन हो रहा था। अर्थात् आषाढ़ मास के पहले दिन वह आकाश में विचरण करनेवाले मेघों को देखता है और उसे अपनी पत्नी यक्षिणी की स्मृति सताने लगती है। वह यक्ष अपनी प्रिया के विरह में तिलमिलाने लगता है और उन्हीं मेघों को अपना दूत बनाकर विकल अवस्था में उनसे प्रार्थना करता है – 'हे मेघ! यदि तुम अलकापुरी में जाकर मेरी प्रियतमा को मेरा सन्देश दे दोगे, तो आपका अनंत उपकार होगा।"

मेघदूत सन्देश-काव्य के दो भाग हैं – पूर्वमेघ और उत्तरमेघ! पूर्वमेघ भाग में रामगिरी से अलकापुरी तक के मार्ग का वर्णन किया गया है: 'हे मेघ! इस मार्ग में नई-नवेली वधुओं की आँखें तुझे एकटक देख रही होंगी, कभी बगुलों की उड़ती हुई माला के प्रचंड स्वर के विचलित होकर

स्त्रियाँ अपने प्रियकरों को आलिंगन देती रहेंगी, कभी तुझे पर्वतों के पैरों तले कमलपुष्पों से भरे सरोवर दिखेंगे, तो कभी विन्ध्य पर्वत की वादियों में मत्त गजराज की पीठ पर रंगीन कशीदाकारी से उत्कीर्ण दुलाई की तरह उन्मुक्त बह रही जलधाराएँ दिखेंगी। मार्ग में उज्जैनपुरी के महाकाल के भी दर्शन होंगे, किन्तु एक बात ध्यान में रखना कि रात के अँधेरे में इतस्तत: घूमनेवाली अभिसारिकाएँ सुवर्ण की रंगीन रेखाओं की भाँति दिखेंगी। तब तुम उन्हें अपनी गर्जनाओं से डराना नहीं!

तदुपरांत अथाह जलाशय के ऊपर से गुजरते हुए ज्ञान रस का प्राशन करते-करते तू . . . ब्रह्मावर्त, क्रोंच पर्वत के मार्ग से हिमालय की पर्वत-श्रृंखलाओं से आवृत्त अलकापुरी में पहुँच जाओगे! वहाँ तुम्हें कन्याएँ मिट्टी में मणियों को छिपाकर खेलती हुई दिखाई देंगी, वहाँ की ललनाओं के हाथों से प्रज्ज्वलित दीप कभी भी नहीं बुझेंगे . . . सूर्योदय के समय राजमार्ग पर पैरों तले रोंदे जानेवाले मंदार पुष्प, कान से गिरनेवाले स्वर्ण-कुंडल, खुली बाहें तुझे कल रात अभिसरण करनेवाली कामिनियों की सूचना देंगी।' इस प्रकार अनेक रीतियों से वह यक्ष उस मेघ को अपने निवासस्थान का सुन्दर, विलासी और विलोभनीय वर्णन सुनाता है। वहाँ अपनी परमप्रिय यक्षिणी का मार्मिक वर्णन करते हुए कहता है कि स्त्री ही ब्रह्मदेव की प्रथम निर्मिति है।

तदुपरांत महाकवि कालिदास ने यक्ष के सुप्रसिद्ध प्रेमयुक्त अलंकारिक सन्देश का वर्णन किया है, जिसमें कालिदास ने अपने हृदय की सुन्दर भावनाओं को ऊकेरा है। आगे चलकर कुबेर महाराज प्रसन्न हो जाते हैं और दोनों प्रियकर-प्रियतमा का मिलन कराते हैं।

मेघदूतम् विप्रलम्भ श्रृंगार का संस्कृत साहित्य सर्वोत्कृष्ट सन्देश-काव्य कहा जा सकता है। विरह वेदना की तीव्रता, प्रेम की अनन्यता तथा भावैकतानता का ऐसा अनूठा चित्रण, वह भी गम्भीर जीवनदृष्टि तथा सांस्कृतिक मूल्यबोध के साथ, अन्यत्र नहीं मिलता। कवि ने अपना काव्य उस यक्ष की उस मनोदशा के चित्रण के साथ आरम्भ किया है, जब रामगिरि पर अभिशप्त जीवन व्यतीत करते-करते उसने किसी तरह आठ महीने तो

बिता दिए हैं। मिलन का समय निकट आता जा रहा है, उसकी प्रिया के लिए चिंता और उससे मिलने की आतुरता बढ़ती जा रही है। यक्ष बावला और अर्धविक्षिप्त-सा हो गया है। ऐसे में वह स्वप्न, कल्पना और अभिव्यक्ति के द्वारा अपने आप को जिलाए रखना चाहता है। उत्कट जिजीविषा, भावसान्द्रता और मनुष्य के कल्पनालोक की रम्यता का बेजोड़ समन्वय *मेघदूतम्* में हम अनुभव करते हैं। हृदय की सुकुमारता और प्रेम के प्रसार का भी बोध *मेघदूतम्* देता है, वह भारतीय साहित्य में सुदुर्लभ है। यक्ष का चित्त कामातुर है, पर प्रेम और विरह की आँच उसके कलुष को धोती चली गई है। इस प्रकार *मेघदूतम्* की रससृष्टि में मनोविज्ञान और चित्त के संस्कार की प्रक्रिया को कवि-प्रतिभा ने बड़ी कुशलता से *मेघदूतम्* में पिरो दिया है।

इस रसमय वर्णन के लिए कालिदास ने केवल मंदाक्रांता छंद का ही आरम्भ से लेकर अंत तक प्रयोग किया है। *औचत्यविचारचर्चा* के रचनाकार और औचित्य सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य क्षेमेन्द्र ने कालिदास के इस मंदाक्रांता प्रेम को अधोरेखित है। कालिदास के द्वारा इस छन्द के इतने सटीक प्रयोग के कारण ही आचार्य-परम्परा में यह मान्यता स्थापित हुई कि "प्रावृट-प्रवास-व्यसने मन्दाक्रांता विराजते।" वर्षा, प्रवास तथा व्यसन के वर्णन के लिए मन्दाक्रांता छन्द विशेष उपयुक्त है।

कालिदास मूलत: विशुद्ध कवि हैं। यद्यपि भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्परा, भारतीय ज्ञान परम्परा और भारतीय राजधर्म के सोद्देश्य प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने कोई रचना नहीं की। तथापि उनके प्रत्येक शब्द से उस-उस विषय का गहन ज्ञान अनुभूत होते रहता है। इसका एक मात्र कारण यह है कि इसी संस्कृति में उसकी जड़ें गहराई से छिपी हुई हैं।

—डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
धाराशिव (महाराष्ट्र)